HASAD KI TABAH KARIYAN AUR ILAAJ

(HINDI BAYAAN)

ह़सद की तबाहकारियां और इलाज

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में होने वाला सुन्नतों भरा बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू तलहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक दिन रहमतुल्लिल आलमीन, शफ़ीउल मुज़निबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और हालत येह थी कि खुशी के आसार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर से इयां थे, फ़रमाया : "जिब्रील मेरे पास हाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَمَا يُرْضِيْكَ يَا مُحَمَّدُ اَنْ لَّا يُصَلِّيَ عَلَيْكَ اَحَدٌ مِنْ اُمَّتِكَ اِلَّا صَلَّيْتُ عَلَيْهِ عَشْرًا ऐ मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जो भी उम्मती, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर एक बार दुरूदे पाक भेजे तो मैं उस पर दस बार रहमत भेजूं وَلَا يُسَلِّمُ عَلَيْكَ اَحَدٌ مِنْ اُمَّتِكَ اِلَّا سَلَّمْتُ عَلَيْهِ عَشْرًا और अगर वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर एक बार सलाम भेजे तो मैं उस पर दस बार सलाम भेजूं।" (مشکاۃ، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ علی النبی وفضلہا، ۱/۱۸۹، حدیث:۹۲۸)

फूल रहमत के हर दम लुटाते रहे	*यां ग़रीबों की बिगड़ी बनाते रहे*
हौज़े कौसर पे मत भूल जाना कहीं	*तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

www.dawateislami.net

बयान सुनने की नियतें

۞ निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ ، اُذْكُرُوا اللّٰهَ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की नियतें

मैं भी नियत करता हूं :

۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा ۞ देख कर बयान करूंगा ۞ पारह **14**, सूरतुन्नहूल, आयत नम्बर **125 :** اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस **4361** में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً या'नी "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा (या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा) ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बयान के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान का मौज़ूअ़ है **:**

''ह़सद की तबाहकारियां और इ़लाज''

सब से पहले हम एक ह़ासिद शख़्स के इ़ब्रतनाक अन्जाम की ह़िकायत सुनेंगे । इस के बा'द ह़सद की ता'रीफ़, इस की मज़म्मत पर आयाते करीमा और चन्द अह़ादीसे मुबारका भी सुनेंगे नीज़ सब से पहले ह़सद किस ने किया और इस मरज़ की अ़लामतें क्या हैं, येह भी अ़र्ज़ करूंगा, फिर इस मोहलिक (हलाक करने वाली) बात़िनी बीमारी के इ़लाज बताने के साथ साथ आख़िर में **''इ़मामा शरीफ़ के मदनी फूल''** भी आप के गोश गुज़ार करूंगा ।

आइये सब से पहले इ़ब्रतनाक अन्जाम वाली ह़िकायत सुनते हैं ।

शिकारी ख़ुद शिकार हो गया

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **98** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''ह़सद''** के सफ़ह़ा **1** पर है **:** एक शख़्स को किसी बादशाह के दरबार में ख़ुसूसी रुत्बा ह़ासिल था । वोह रोज़ाना बादशाह के रू बरू खड़े हो कर बत़ौरे नसीह़त कहा करता था **:** ''एह़सान करने वाले के एह़सान का बदला दो, बुरे शख़्स से बुराई से पेश न आओ क्यूंकि बुरे इन्सान के लिये तो ख़ुद उस की बुराई ही काफ़ी है ।'' बादशाह उस की बेहतरीन नसीह़तों की वजह से उसे बहुत मह़बूब रखता था । बादशाह की त़रफ़ से दी जाने वाली इ़ज़्ज़त व मह़ब्बत देख कर एक दरबारी को उस शख़्स से ह़सद हो गया । एक दिन ह़ासिद दरबारी उस शख़्स की इ़ज़्ज़त के ख़ातिमे के लिये बादशाह से झूट बोलते हुवे कहने लगा **:** येह शख़्स आप के बारे में लोगों से कहता फिरता है कि ''बादशाह के मुंह से बहुत बदबू आती है !'' बादशाह ने पूछा **:** ''तुम्हारे पास इस का क्या सुबूत है ?'' उस ने अ़र्ज़ की **:** ''कल उसे अपने क़रीब बुला कर देखिये, येह अपनी नाक पर हाथ रख लेगा ।'' अगले रोज़ ह़ासिद, उस मुक़र्रब शख़्स को अपने घर ले गया और उसे

www.dawateislami.net

बहुत सारा कच्चे लहसन वाला सालन खिला दिया । येह मुक़र्रब शख़्स खाने से फ़ारिग़ हो कर ह़स्बे मा'मूल दरबार पहुंचा और बादशाह के रू बरू नसीह़त बयान की । बादशाह ने उसे अपने क़रीब बुलाया, उस ने इस ख़याल से कि मेरे मुंह की लहसन की बू बादशाह तक न पहुंचे, अपने मुंह पर हाथ रख लिया । बादशाह को इस ह़रकत के बाइस यक़ीन हो गया कि दूसरा दरबारी दुरुस्त कह रहा था । बादशाह ने अपने हाथ से एक ''आ़मिल'' (या'नी सरकारी अहलकार) को ख़त़ लिखा : ''इस ख़त़ के लाने वाले की फ़ौरन गर्दन उड़ा दो और इस की लाश में भुस भर कर हमारी त़रफ़ रवाना करो ।''

चूंकि बादशाह की येह आ़दत थी कि जब किसी को इन्आ़मो इकराम देना मक़्सूद होता तो ख़ुद अपने हाथ से ख़त़ लिखता, इस के इलावा कोई भी हुक्म अपने हाथ से न लिखता था । लेकिन इस मरतबा उस ने ख़िलाफ़े मा'मूल अपने हाथ से सज़ा का हुक्म लिख दिया । जब वोह मुक़र्रब आदमी ख़त़ ले कर शाही महल से बाहर निकला तो ह़ासिद ने उस से पूछा : ''येह तुम्हारे हाथ में क्या है ?'' उस ने जवाब दिया : ''बादशाह ने अपने हाथ से फुलां आ़मिल के लिये ख़त़ लिखा था, येह वोही है ।'' ह़ासिद ने ख़त़ लिखने के साबिक़ा त़रीक़े पर क़ियास करते हुवे लालच में आ कर कहा : ''येह ख़त़ मुझे दे दो ।'' मुक़र्रब ने आ'ला ज़रफ़ी का मुज़ाहरा करते हुवे ख़त़ उस के ह़वाले कर दिया । ह़ासिद फ़ौरन आ़मिल के पास पहुंचा और ख़त़ उस के हाथ में देने के बा'द इन्आ़मो इकराम त़लब किया । आ़मिल ने कहा : ''इस में तो ख़त़ लाने वाले के क़त्ल करने का हुक्म दर्ज है ।'' अब तो ह़ासिद के अवसान ख़त़ा हो गए, बड़ी आ़जिज़ी से बोला : ''यक़ीन करो कि येह ख़त़ तो किसी दूसरे शख़्स के लिये लिखा गया था, तुम बादशाह से मा'लूम करवा लो ।'' आ़मिल ने जवाब दिया : ''बादशाह सलामत के हुक्म में किसी ''अगर-मगर'' की गुन्जाइश नहीं होती ।'' येह कह कर उसे क़त्ल करवा दिया ।

www.dawateislami.net

दूसरे दिन मुक़र्रब आदमी, ह़स्बे मा'मूल दरबार में पहुंचा और नसीह़त बयान की । बादशाह ने मुतअ़ज्जिब हो कर अपने ख़त़ के बारे में पूछा । उस ने कहा : ''वोह तो मुझ से फुलां दरबारी ने ले लिया था ।'' बादशाह ने कहा : ''वोह तो तुम्हारे बारे में बताता था कि तुम मुझे गन्दा दह्न (या'नी बदबू दार मुंह वाला) कहा करते हो !'' मुक़र्रब शख़्स ने अ़र्ज़ की : ''मैं ने तो कभी ऐसी कोई बात नहीं की ।'' बादशाह ने मुंह पर हाथ रखने की वजह दरयाफ़्त की, तो उस ने अ़र्ज़ की : ''उस शख़्स ने मुझे बहुत सा कच्चा लह्सन खिला दिया था, मैं नहीं चाहता था कि उस की बू आप तक पहुंचे ।'' बादशाह सारा मुआ़मला समझ गया और उसे ताकीद की : अब तुम नसीह़त करते हुवे रोज़ाना येह बात भी कहा करो : इन्सान की तबाही के लिये उस का बुरा होना ही काफ़ी है जैसा कि उस ह़ासिद का ह़ाल हुवा । (احیاء العلوم)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ह़सद व लालच के मज़मूम (या'नी बुरे) जज़्बे ने दरबारी को कैसी ख़त़रनाक और शर्मनाक साज़िश करने पर तय्यार किया, लेकिन ''ख़ुद अपने दाम में सय्याद आ गया'' के मिस्दाक़ वोह अपने ही फैलाए हुवे जाल में फंस कर मौत के मुंह में जा पहुंचा । नीज़ इस ह़िकायत से येह दर्स भी मिला कि किसी की ने'मतें या फ़ज़ीलतें देख कर दिल नहीं जलाना चाहिये और न ही उस से ने'मतों के छिन जाने की तमन्ना करनी चाहिये क्यूंकि उसे येह सब कुछ देने वाला हमारा ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ है और वोह बे नियाज़ जिस को चाहे जितना नवाज़ दे, हम कौन होते हैं उस की तक़्सीम पर ए'तिराज़ या शिक्वा करने वाले । याद रहे ! ह़सद तबाह कुन आ़दत, निहायत बुरी ख़स्लत और गुनाहे अ़ज़ीम है । ह़सद करने वाला अपनी सारी ज़िन्दगी जलन और घुटन की आग में जलता रहता है और उसे चैनो सुकून नसीब नहीं होता । बद क़िस्मती से येह मरज़ हमारे मुआ़शरे में बहुत आ़म है, भारी ता'दाद इस आफ़त में मुब्तला है, किसी की इ़ल्मी

www.dawateislami.net

क़ाबिलिय्यत, बेहतरीन ज़ेहनी सलाहिय्यत, कसीर मालो दौलत, इ़ज़्ज़त व शराफ़त और बेहतरीन मुलाज़मत व वजाहत को देख कर ह़सद किया जाता है। ह़सद एक ऐसा क़बीह़ (बुरा) फ़े'ल है कि इस के मुतअ़ल्लिक़ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं :

اَلْحَسَدُ يَاْكُلُ الْحَسَنَاتِ كَمَا تَاْكُلُ النَّارُ الْحَطَبَ ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग लकड़ी को खा जाती है।" (سنن ابن ماجہ ج۴ ص ۴۷۳ حدیث ۴۲۱۰) एक और ह़दीसे पाक में उख़ुव्वत व भाईचारे को क़ाइम रखने का त़रीक़ा बताते हुवे इरशाद फ़रमाया : आपस में ह़सद न करो, आपस में बुग़्ज़ो अ़दावत न रखो, पीठ पीछे एक दूसरे की बुराई बयान न करो और ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! भाई भाई हो कर रहो। (صحیح البخاری، کتاب الادب، ج۴، الحدیث: ۶۰۶۶، ص۱۱۷)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : बद गुमानी, ह़सद, बुग़्ज़ वग़ैरा वोह चीज़ें हैं जिन से मह़ब्बत टूटती है और इस्लामी भाई चारा मह़ब्बत चाहता है, लिहाज़ा येह उ़यूब छोड़ो ताकि भाई भाई बन जाओ। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. **6** स. **208**)(ह़सद, स. **7**)

मा'लूम हुवा कि ह़सद इस क़दर बुरा फ़े'ल है कि इस के सबब न सिर्फ़ नेक आ'माल ज़ाएअ़ होते हैं बल्कि मुसलमानों की आपस में मह़ब्बत व उख़ुव्वत व भाई चारगी ख़त्म हो कर दिलों में बुग़्ज़ो अ़दावत व दुश्मनी पैदा हो जाती है। लिहाज़ा हमें दीगर बात़िनी बीमारियों के साथ साथ ह़सद से भी बचना चाहिये। आइये इस मूज़ी मरज़ से बचने के लिये इस की ता'रीफ़ सुनते हैं :

ह़सद की ता'रीफ़

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **"बुरे ख़ातिमे के अस्बाब"** सफ़ह़ा **13** पर फ़रमाते हैं : "लिसानुल अ़रब" जिल्द **3** सफ़ह़ा **166** पर ह़सद की ता'रीफ़ यूं

www.dawateislami.net

बयान की गई है : اَلْحَسَدُ اَنْ تَتَمَنّٰی زَوَالَ نِعْمَةِ الْمَحْسُوْدِ اِلَيْكَ या'नी ह़सद येह है कि तू तमन्ना करे कि मह़सूद की ने'मत उस से ज़ाइल हो कर तुझे मिल जाए।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ह़सद करने वाले को ह़ासिद और जिस से ह़सद किया जाए उस को मह़सूद कहते हैं।

ह़सद की ता'रीफ़ का आसान लफ़्ज़ों में ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ता'रीफ़ से मा'लूम हुवा कि किसी के पास कोई ने'मत देख कर तमन्ना करना कि काश ! इस से येह ने'मत छिन कर मुझे ह़ासिल हो जाए। मसलन किसी की शोहरत या इ़ज़्ज़त से नफ़रत का जज़्बा रखते हुवे ख़्वाहिश करना कि येह किसी त़रह़ ज़लील हो जाए और इस की जगह मुझे इ़ज़्ज़त का मक़ाम ह़ासिल हो जाए, नीज़ किसी मालदार से जल कर येह तमन्ना करना कि इस का किसी त़रह़ नुक़्सान हो जाए और येह ग़रीब हो जाए और मैं इस की जगह पर दौलत मन्द बन जाऊं, येह ह़सद कहलाता है। अलबत्ता ग़िब्त़ा या'नी रश्क करना जाइज़ है कि कोई येह तमन्ना करे कि येह ने'मत औरों के पास भी रहे, मुझे भी मिल जाए या'नी औरों का ज़वाल नहीं चाहता, अपनी तरक़्क़ी का ख़्वाहिश मन्द है इसे ग़िब्त़ा (या'नी रश्क) या तनाफ़ुस (या'नी ललचाना) कहते हैं।

(तफ़्सीरे नई़मी जि. **1** स. **614**, तफ़्सीरे कबीर)

याद रखिये ह़सद और इस के सबब झूट, ग़ीबत, चुग़ली, आबरू रैज़ी जैसे गुनाहों का इर्तिकाब यक़ीनन ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़सद करने वालों की मज़म्मत बयान करते हुवे पारह **1** सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर **109** में इरशाद फ़रमाता है :

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बहुत किताबियों ने चाहा काश तुम्हें ईमान के बा'द कुफ़्र की त़रफ़ फेर दें अपने दिलों

www.dawateislami.net

مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۰۹﴾	की जलन से बा'द इस के कि ह़क़ इन पर ख़ूब ज़ाहिर हो चुका है तो तुम छोड़ो और दर गुज़र करो यहां तक कि **अल्लाह** अपना हुक्म लाए बेशक **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है।

पारह **5** सूरतुन्निसा की आयत नम्बर **54** में इरशाद होता है **:**

اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** या लोगों से ह़सद करते हैं इस पर जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया।

एक और मक़ाम पर इरशाद होता है **:**

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ (پ۵، النسآء:۳۲)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और इस की आरज़ू न करो जिस से **अल्लाह** ने तुम में एक को दूसरे पर बड़ाई दी।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि कुरआने पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें ह़सद जैसे क़बीह़ (बुरे) फ़े'ल से बचने का हुक्म इरशाद फ़रमाया है। हर मुसलमान को इस बुरी आ़दत से बचना ज़रूरी है। नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इस मोहलिक मरज़ से बचने का हुक्म इरशाद फ़रमाया है, आइये इस ज़िम्न में **4** अह़ादीसे मुबारका सुनते हैं।

(**1**) ह़सद ईमान को इस त़रह़ ख़राब कर देता है, जिस त़रह़ ऐलवा (या'नी एक कड़वे दरख़्त का जमा हुवा रस) शहद को ख़राब कर देता है।"

(کنز العمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، الحدیث:۷۴۳۷، ج۳، ص۱۸۶)

(**2**) जब तुम ह़सद करो तो ज़ियादती न करो, जब तुम्हें बद गुमानी पैदा हो तो इस पर यक़ीन न करो और जब तुम्हें (किसी काम के बारे में) बद शुगूनी पैदा हो तो उसे कर गुज़रो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा करो।"

(الکامل فی ضعفاء الرجال، عبد الرحمن بن سعد، ج۵، ص۵۰۹)

www.dawateislami.net

(3) "لَایَزَالُ النَّاسُ بِخَیْرٍ مَالَمْ یَتَحَاسَدُوْا" लोग जब तक आपस में ह़सद न करेंगे, हमेशा भलाई पर रहेंगे।" (المعجم الکبیر، الحدیث:۸۱۵۷، ج۸، ص۳۰۹)

(4) रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम में पिछली उम्मतों की बीमारी ज़रूर फैलेगी और वोह बुग़्ज़ो ह़सद है जो कि उस्तरे की त़रह़ है, लेकिन येह उस्तरा (या'नी बुग़्ज़ो ह़सद) दीन को काटता है न कि बालों को, उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की जान है ! तुम उस वक़्त तक जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकते, जब तक मोमिन न हो जाओ और उस वक़्त तक (कामिल) मोमिन नहीं हो सकते, जब तक आपस में मह़ब्बत न करो, क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊं कि जब तुम इस पर अ़मल करो तो आपस में मह़ब्बत करने लगो ? (वोह चीज़ येह है कि) तुम आपस में सलाम को आ़म करो।" (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الزبیر بن العوام، الحدیث: ۱۴۱۲، ج۱، ص۳۴۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा अह़ादीसे मुबारका से मा'लूम हुवा कि ह़सद ईमान के लिये किस क़दर ख़त़रनाक है कि जिस त़रह़ ऐलवा (कड़वा रस) शहद को ख़राब कर देता है, इसी त़रह़ ह़सद भी ईमान को बरबाद कर देता है। हमें भी इस बात़िनी मरज़ से हर वक़्त बचने की कोशिश करनी चाहिये, क्यूंकि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि लोग उस वक़्त तक भलाई में रहेंगे, जब तक आपस में ह़सद न करेंगे। बुग़्जो ह़सद से बचने और आपस में मह़ब्बत व उख़ुव्वत क़ाइम करने के लिये नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सलाम को आ़म करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया है। लिहाज़ा हमें भी अपनी येह आ़दत बना लेनी चाहिये कि हम जब भी किसी से मुलाक़ात करें तो सलाम की सुन्नतें और आदाब का ख़याल रखते हुवे सलाम व मुसाफ़ह़ा किया करें। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा मदनी

www.dawateislami.net

इन्आ़मात में से मदनी इन्आ़म नम्बर **6** क्या है ? आइये सुनते हैं : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : ''क्या आज आप ने घर, दफ़्तर, बस ट्रेन वग़ैरा में आते जाते और गलियों से गुज़रते हुवे राह में खड़े या बैठे हुवे **मुसलमानों को सलाम** किया ?''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें अपने पाक कलाम में एक दूसरे को सलाम करने की तरग़ीब दिलाई है, चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَاۤ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ (پ٥، النساء:٨٦)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब तुम्हें कोई किसी लफ़्ज़ से सलाम करे तो तुम इस से बेहतर लफ़्ज़ जवाब में कहो या वोही कह दो।

सलाम के जवाब का अफ़्ज़ल त़रीक़ा

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द **22** सफ़ह़ा **409** पर इरशाद फ़रमाते हैं : ''कम अज़ कम اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم और इस से बेहतर وَرَحْمَةُ اللهِ मिलाना और सब से बेहतर وَبَرَكَاتُه शामिल करना और इस पर ज़ियादत नहीं। फिर सलाम करने वाले ने जितने अल्फ़ाज़ में सलाम किया है, जवाब में इतने का इआ़दा तो ज़रूर है और अफ़्ज़ल येह है कि जवाब में ज़ियादा कहे। उस ने اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم कहा तो येह وَعَلَيْكُمُ السَّلَام وَرَحْمَةُ الله कहे। और अगर उस ने اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم وَ رَحْمَةُ الله कहा तो येह وَعَلَيْكُمُ السَّلَام وَ رَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ कहे और अगर उस ने وَبَرَكَاتُهٗ तक कहा तो येह भी इतना ही कहे कि इस से ज़ियादत (ज़ियादा अल्फ़ाज़) नहीं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सब से पहले शैत़ान ने ह़सद किया था

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस प्यारी सुन्नत पर अ़मल करते हुवे अपने दिल को बुग़्ज़ो ह़सद से पाक करते हुवे हर छोटे बड़े को सलाम करते वक़्त पहल करनी चाहिये और अगर कभी हमारे दिल में किसी मुसलमान के लिये ह़सद पैदा हो भी जाए तो ख़ुद को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डराते हुवे फ़ौरन तौबा कर लेनी चाहिये, ऐसा न हो कि इस शैत़ानी काम के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम से नाराज़ हो जाए और हमारी दुन्या व आख़िरत बरबाद हो जाए। याद रखिये ! ह़सद सब से पहला आस्मानी गुनाह है, जो शैत़ान ने किया था, ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं : रब तआ़ला की पहली नाफ़रमानी जिस गुनाह के ज़रीए़ की गई वोह ह़सद है, इब्लीसे मलऊ़न ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰى نَبِيِّنَاوَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को सजदा करने के मुआ़मले में उन से ह़सद किया, लिहाज़ा इसी ह़सद ने इब्लीस को **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन की नाफ़रमानी पर उभारा।

(الدر المنثور فی التفسیر المأثور، سورۃ البقرۃ... تحت الآیۃ ۳۴، ج۱، ص۱۲۵)

ह़सद शैत़ान का हथया२ है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने रब عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी कर के शैत़ान ख़ुद तो तबाहो बरबाद हो चुका, अब वोह दूसरों की तबाही व बरबादी के दरपे है और ह़सद इस का एक अहम हथयार है, चुनान्चे, जब ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰى نَبِيِّنَاوَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम पर पानी का अ़ज़ाब आने से पहले ब हुक्मे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ हर जिन्स का एक एक जोड़ा कश्ती में सुवार किया और ख़ुद भी सुवार हुवे तो आप ने एक अजनबी बुढ्ढे को देख कर

www.dawateislami.net

पूछा : तुम्हें किस ने कश्ती में सुवार किया है ? उस ने कहा : मैं इस लिये आया हूं कि लोगों के दिलों में वस्वसे डालूं, ताकि इस वक़्त इन के दिल मेरे साथ और बदन आप के साथ हों । आप (عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام) ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन ! सफ़ीने से उतर जा क्यूंकि तू मर्दूद है ।" तो शैत़ान ने कहा : "मैं लोगों को पांच चीज़ों से हलाकत में डालता हूं, तीन चीज़ें तो आप عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام को अभी बता सकता हूं मगर दो नहीं बताऊंगा ।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ (عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام) की त़रफ़ वही फ़रमाई : "आप इस से कहिये कि मुझे तीन से आगाही की ज़रूरत नहीं तू मुझे सिर्फ़ वोही दो बता दे ।" शैत़ान कहने लगा : वोह दो ऐसी हैं जो मुझे कभी झूटा नहीं करतीं और न ही कभी नाकाम लौटाती हैं और इन्हीं से मैं लोगों को तबाही के दहाने पर ला खड़ा करता हूं । इन में से एक **ह़सद** है और दूसरी **ह़िर्स** (लालच) इसी ह़सद की वजह से तो मैं रान्दए दरगाह और मलऊ़न हुवा । (تفسیر حقی، سورۂ ھود، تحت الآیہ: ۴۰، ج۴، ص۱۲۷)

मुह़ीत़ दिल पे हुवा हाए नफ़्से अम्मारा	*दिमाग़ पर मेरे इ़ब्लीस छा गया या रब*
रिहाई मुझ को मिले काश! नफ़्सो शैत़ां से	*तेरे ह़बीब का देता हूं वासित़ा या रब*
हमारी बिगड़ी हुई आ़दतें निकल जाएं	*मिले गुनाहों के अमराज़ से शिफ़ा या रब*

बात़िनी गुनाहों की तबाहकारियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि ह़सद शैत़ान का कामयाब तरीन वार है, वोह इस के ज़रीए़ झूट, ग़ीबत, चुग़ली, तोहमत, शुमातत (या'नी किसी मुसलमान को नुक़्सान पहुंचने पर ख़ुश होना) ऐ़ब दरी, ईज़ाए मुस्लिम (मुसलमानों को तक्लीफ़ देना) और न जाने कैसे कैसे गुनाह करवाता है ! लिहाज़ा हमें शैत़ान के इस कामयाब वार को नाकाम बनाने की कोशिश करनी होगी । याद रहे ! हम में से हर एक को इस दुन्या में अपने

www.dawateislami.net

अपने हिस्से की ज़िन्दगी गुज़ार कर जहाने आख़िरत के सफ़र पर रवाना हो जाना है । इस सफ़र के दौरान हमें क़ब्रो हश्र और पुल सिरात़ के नाज़ुक मरहलों से गुज़रना पड़ेगा, इस के बा'द जन्नत या दोज़ख़ ठिकाना होगा । इस दुन्या में की जाने वाली नेकियां दारे आख़िरत की आबादी जब कि गुनाह, बरबादी का सबब बनते हैं । जिस त़रह़ कुछ नेकियां ज़ाहिरी व बात़िनी होती हैं जैसे नमाज़ व इख़्लास वग़ैरा, इसी त़रह़ बा'ज़ गुनाह भी ज़ाहिरी व बात़िनी होते हैं, जैसे क़त्ल ज़ाहिरी गुनाह है और रियाकारी बात़िनी गुनाह है । इस पुर फ़ितन दौर में अव्वल तो गुनाहों से बचने का ज़ेह्न बहुत ही कम है और जो ख़ुश नसीब गुनाहों के इलाज की कोशिशें करते भी हैं तो उन की भी ज़ियादा तर तवज्जोह ज़ाहिरी गुनाहों से बचने पर होती है, ऐसे में बात़िनी गुनाहों का इलाज नहीं हो पाता, ह़ालांकि येह ज़ाहिरी गुनाहों की निस्बत ज़ियादा ख़त़रनाक होते हैं, क्यूंकि एक बात़िनी गुनाह बे शुमार ज़ाहिरी गुनाहों का सबब बन सकता है मसलन क़त्ल, ज़ुल्म, ग़ीबत, चुग़ली, ऐब दरी जैसे गुनाहों के पीछे कीने और कीने के पीछे ग़ुस्से का अ़मल दख़्ल होना मुमकिन है ।

बात़िन ख़राब तो ज़ाहिर ख़राब

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الوَالِی लिखते हैं : ज़ाहिरी आ'माल का बात़िनी अवसाफ़ के साथ एक ख़ास तअ़ल्लुक़ है । अगर बात़िन ख़राब हो तो ज़ाहिरी आ'माल भी ख़राब होंगे और अगर बात़िन ह़सद, रिया और तकब्बुर वग़ैरा उ़यूब से पाक हो तो ज़ाहिरी आ'माल भी दुरुस्त होते हैं । (منہاج العابدین، ص ۱۳ ملخصاً)

लिहाज़ा हर एक पर ज़ाहिरी गुनाहों के साथ साथ बात़िनी गुनाहों के इलाज पर भी भर पूर तवज्जोह देना लाज़िम है ताकि हम अपनी आख़िरत को इन की तबाकारियों से मह़फ़ूज़ रख सकें । आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत,

www.dawateislami.net

मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द **23** स. **624** पर फ़रमाते हैं : मुह़र्रमाते बाति़निय्या (या'नी बाति़नी ममनूआ़त मसलन) तकब्बुर व रिया व उ़ज्ब व ह़सद वग़ैरहा और इन के मुआ़लजात (या'नी इलाज) कि इन का इ़ल्म (या'नी जानना) भी हर मुसलमान पर अहम फ़राइज़ से है।''

(फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. **23** स.**624**)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बाति़नी बीमारियों से आगाही, बाति़नी बीमारियों के अस्बाब और इन के इलाज के मुतअ़ल्लिक़ इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब **''बाति़नी बीमारियों की मा'लूमात''** का मुत़ालआ़ मुफ़ीद रहेगा। आज ही मक्तबतुल मदीना से त़लब फ़रमा कर अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करने की निय्यत फ़रमा लीजिये। शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस किताब की अहम्मिय्यत बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : ''येह किताब प्यारी और तारीख़ी किताब है, शायद किसी ने ऐसी किताब शाएअ़ न की हो, आप पढ़ेंगे तो ह़ैरान रह जाएंगे, **11-11** बार घोल कर पी लीजिये (या'नी **11** बार दिलजमई के साथ मुत़ालआ़ कर लीजिये।)''

कौन किस से ह़सद करता है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यूं तो किसी को किसी से भी ह़सद हो सकता है, लेकिन उस शख़्स से ह़सद हो जाने का इमकान ज़ियादा होता है जिस से इन्सान का ज़ियादा मेल जोल होता है या वोह उस का हम पेशा या हम पल्ला होता है या फिर उस से कोई क़रीबी तअ़ल्लुक़ होता है, मसलन ताजिर कारोबारी तरक़्क़ी की वजह से दूसरे ताजिर से ह़सद करता है, किसी डॉक्टर से नहीं, एक डॉक्टर इलाज में महारत व कामयाबी की वजह से दूसरे डॉक्टर से ह़सद करता है किसी ट्रान्स्पोर्टर से नहीं, एक ट्रान्सपोर्टर मुसाफ़िरों को अपनी

www.dawateislami.net

त़रफ़ माइल कर लेने में कामयाबी की बिना पर दूसरे ट्रान्सपोर्टर से ह़सद करता है, किसी त़ालिबे इ़ल्म से नहीं, एक त़ालिबे इ़ल्म ज़िहानत, अच्छे ह़ाफ़िज़े, इ़ल्मी मक़ाम, इम्तिह़ानात में मिलने वाली पोज़ीशन और उस्ताज़ की त़रफ़ से मिलने वाली शाबाश और दीगर सलाह़िय्यतों की वजह से दूसरे त़ालिबे इ़ल्म से ह़सद करता है, किसी ना'त ख़्वां से नहीं, एक ना'त ख़्वां अच्छी आवाज़, पुर सोज़ अन्दाज़ और नोटों की बरसात की वजह से दूसरे ना'त ख़्वां से तो मुब्तलाए ह़सद हो सकता है, मद्रसे में पढ़ाने वाले किसी उस्ताज़ से नहीं, एक उस्ताज़ अच्छे अन्दाज़े तदरीस और त़लबा व इन्तिज़ामिय्या में मक़्बूलिय्यत की वजह से दूसरे उस्ताज़ से तो ह़सद में मुब्तला हो सकता है किसी पीर साह़िब से नहीं, एक पीर मुरीदों की कसरत और हर ख़ासो आ़म में मक़्बूलिय्यत की वजह से दूसरे पीर से ह़सद कर सकता है, किसी कारोबारी आदमी (Business Man) से नहीं, एक कारोबारी आदमी (Business Man) खुली आमदनी, बंगला व गाड़ी, ऐ़शो इ़शरत, समाजी ह़ैसिय्यत, शख़्सिय्यात में मिलने वाले मक़ाम और ख़ानदान में मिलने वाली इ़ज़्ज़त की वजह से दूसरे कारोबारी आदमी (Business Man) से ह़सद कर सकता है किसी आ़लिम से नहीं, एक आ़लिम इ़ज़्ज़त व शोहरत, अ़क़ीदत मन्दों की कसरत, दौलत मन्दों की "शफ़्क़त" जलसे में कसीर सामेईन की शिरकत और भारी भरकम अल्क़ाबात के साथ लोगों में मक़्बूलिय्यत की वजह से दूसरे आ़लिम से ह़सद में मुब्लता हो सकता है, इसी त़रह़ इस्लामी बहनों में भी लिबास व ज़ेवर, घर की आराइश व ज़ैबाइश, सूरतो सीरत, सुसराल में अच्छा बरताव और पुर सुकून घरेलू ज़िन्दगी जैसी चीज़ें ह़सद की बुन्याद बनती हैं, जिस से घरेलू साज़िशें जनम लेती हैं और घरों का माह़ोल कशीदा हो जाता है। इसी त़रह़ मुख़्तलिफ़ वुजूहात की बिना पर सास बहू, सगे भाई बहनों और क़रीबी रिश्तेदारों तक में ह़सद पैदा हो सकता है।

www.dawateislami.net

ह़ासिद की तीन निशानियां

ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ासिद (ह़सद करने वाले) की तीन निशानियां हैं : (1) मह़सूद (जिस से ह़सद किया जाए) की मौजूदगी में चापलूसी (या'नी बेजा ता'रीफ़) करना (2) पीठ पीछे ग़ीबत करना (3) मह़सूद की मुसीबत पर ख़ुश होना। (منہاج العابدین، ص ۷۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क्या हम किसी के ह़सद में मुब्तला हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम में से हर एक को ग़ौर करना चाहिये कि ख़ुदा न ख़्वास्ता कहीं हम किसी से ह़सद तो नहीं करते ! इस के लिये ख़ुद को एक इम्तिह़ान (Test) से गुज़ारिये और अपने आप से चन्द सुवालात के जवाबात त़लब कीजिये : मसलन हमारे रिश्तेदारों, मह़ल्ले वालों, दोस्त अह़बाब और मिलने जुलने वालों, अल ग़रज़ जिस जिस से हमारा वासित़ा पड़ता है, इन में से कोई शख़्स ऐसा तो नहीं जिस की इ़ज़्ज़त व शोहरत, मालो दौलत, तक़्वा व इ़बादत, ज़िहानत या दीगर ख़ुसूसिय्यात की वजह से हम दिल ही दिल में उस से जलते हों ? उस की किसी ने'मत के ज़वाल के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बद दुआ़एं करते हों ? उस शख़्स से मिलने से कतराते हों और अगर मिलना ही पड़े तो बे दिली के साथ मिलते हों ? उस की ता'रीफ़ सुनने का जी न चाहता हो ? उस की ता'रीफ़ सुन कर मारे जलन के, हमारी सांसें बे तरतीब हो जाती हों और फ़ौरन बात का रुख़ बदलने की कोशिश करते हों ? अगर मजबूरन ख़ुद उस की ता'रीफ़ करनी पड़े तो मुर्दा दिली से करते हों ? उस की इ़ज़्ज़तो शोहरत के ज़वाल के लिये उस की मन्फ़ी बातों और ऐ़बों की तलाश व जुस्तजू में मस्रूफ़ रहते हों ? और अगर उस की

www.dawateislami.net

कोई ग़लती या ख़ामी मिल जाए तो ख़ूब उछालते हों ? उस की ग़ीबत व चुग़ली करने और सुनने से सुकून हासिल होता हो ? जब उसे कोई दीनी या दुन्यवी नक़्सान पहुंचे तो हम ख़ुशी से फूले न समाते हों, जब कि उसे ख़ुशी मिलने पर रन्जीदा व मलूल हो जाते हों ? उस की तरक़्क़ी पर हम आग के अंगारों पर लौटने लगते हों ? उस की सलाहिय्यतों का मुख़्लिफ़ अन्दाज़ में मज़ाक़ उड़ाते हों ? उसे निगाहे हक़ारत (या'नी नफ़रत) से देखते हों ? उसे लोगों की नज़रों से भी गिराने की कोशिश करते हों ? जब उसे हमारी मदद की ज़रूरत हो तो बा वुजूदे क़ुदरत इन्कार कर देते हों ? बल्कि कोशिश करते हों कि दूसरे भी उस की मदद न करने पाएं ? मौक़अ़ मिलने पर उसे नुक़्सान पहुंचाते हों ?.....

अगर इन सुवालात के जवाबात **"हां"** में आएं तो संभल जाइये कि हसद हमारे दिल में घुस चुका है, इस से पहले कि येह हम को तबाहो बरबाद कर दे, इसे बाहर निकाल दीजिये और इस के इलाज की कोशिश कीजिये ।

हसद का एक इलाज

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الوَالِي हसद का इलाज बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : हसद करने वाला ठन्डे दिल से येह सोच ले कि मेरे हसद करने से हरगिज़ हरगिज़ किसी की दौलत व ने'मत बरबाद नहीं हो सकती । और मैं जिस पर हसद कर रहा हूं, मेरे हसद से उस का कुछ भी नहीं बिगड़ सकता, बल्कि मेरे हसद का नुक़्सान दीनो दुन्या में मुझ को ही पहुंच रहा है कि मैं ख़्वाह म ख़्वाह दिल की जलन में मुब्तला हूं और हर वक़्त हसद की आग में जलता रहता हूं और मेरी नेकियां बरबाद हो रही हैं और मैं जिस पर हसद कर रहा हूं, मेरी नेकियां क़ियामत में

www.dawateislami.net

उस को मिल जाएंगी, फिर येह भी सोचे कि मैं जिस पर ह़सद कर रहा हूं, उस को ख़ुदावन्दे करीम جَلَّ جَلَالُہٗ ने येह ने'मतें दी हैं और इस पर नाराज़ हो कर ह़सद में जल रहा हूं तो मैं गोया ख़ुदावन्दे तआ़ला की अ़त़ा पर ए'तिराज़ कर के अपना दीनो ईमान ख़राब कर रहा हूं। येह सोच कर फिर अपने दिल में इस ख़याल को जमाए कि **अल्लाह** तआ़ला अ़लीमो ह़कीम है। जो शख़्स जिस चीज़ का अहल होता है, **अल्लाह** तआ़ला उस को वोही चीज़ अ़त़ा फ़रमाता है। मैं जिस पर ह़सद कर रहा हूं, **अल्लाह** के नज़दीक चूंकि वोह इन ने'मतों का अहल था इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने उस को येह ने'मतें अ़त़ा फ़रमाई हैं और मैं चूंकी इन का अहल नहीं था, इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे नहीं दीं। इस त़रह़ ह़सद का मरज़ दिल से निकल जाएगा और ह़ासिद को ह़सद की जलन से नजात मिल जाएगी।

(احیاء علوم الدین، کتاب ذم الغضب والحقد والحسد، بیان الدواء الذی ینفی مرض الحسد عن القلب، ج۳، ص۳۴۲)

ह़सद के मज़ीद दस इलाज

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ **352** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बात़िनी बीमारियों की मा'लूमात''** से ह़सद के मज़ीद दस इलाज सुनिये **:**

(1).....''तौबा कर लीजिये।'' ह़सद बल्कि तमाम गुनाहों से तौबा कीजिये कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे सामने इक़रार करता हूं कि मैं अपने फ़ुलां भाई से ह़सद करता था तू मेरे तमाम गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा दे। आमीन

(2).....''दुआ़ कीजिये।'' कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी रिज़ा के लिये ह़सद से छुटकारा ह़ासिल करना चाहता हूं, तू मुझे इस बात़िनी बीमारी से शिफ़ा दे और मुझे ह़सद से बचने में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। आमीन

www.dawateislami.net

(3).....''**रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहिये ।**'' कि रब عَزَّوَجَلَّ ने मेरे इस भाई को जो भी ने'मतें अ़ता फ़रमाई हैं वोह उस की रिज़ा है वोह रब عَزَّوَجَلَّ इस बात पर क़ादिर है कि जिसे चाहे जो चाहे जितना चाहे, जिस वक़्त चाहे अ़ता फ़रमा दे ।

(4).....''**ह़सद की तबाहकारियों पर नज़र रखिये ।**'' कि ह़सद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी का सबब है, ह़सद से नेकियां ज़ाएअ़ होती हैं, ह़सद से ग़ीबत, बद गुमानी, चुग़ली जैसे गुनाह सरज़द होते हैं, ह़सद से रूह़ानी सुकून बरबाद हो जाता है ।'' वग़ैरा वग़ैरा

(5).....''**ह़सद का सबब बनने वाली ने'मतों पर ग़ौर कीजिये ।**'' कि अगर वोह दुन्यवी ने'मतें हैं तो आ़रिज़ी हैं और आ़रिज़ी चीज़ पर ह़सद कैसा ? अगर दीनी शरफ़ व फ़ज़ीलत है तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता पर ह़सद करना अ़क़्लमन्दी नहीं ।

(6).....''**लोगों की ने'मतों पर निगाह न रखिये ।**'' के उ़मूमन इस से एह़सासे कमतरी पैदा होता है जो ह़सद का बाइ़स है, अपने से नीचे वालों पर नज़र रखिये और बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में शुक्र अदा कीजिये ।

(7).....''**अपनी ख़ामियों की इस्लाह़ में लग जाइये ।**'' कि जब दूसरों की ख़ूबियों पर नज़र रखेंगे तो अपनी इस्लाह़ से मह़रूम हो जाएंगे और जब अपनी इस्लाह़ में लग जाएंगे तो ह़सद जैसे बुरे काम की फ़ुरसत ही नहीं मिलेगी ।

(8).....''**नफ़रत को मह़ब्बत में बदलने की तदबीरें कीजिये ।**'' कि जिस से ह़सद है उस से सलाम में पहल कीजिये, उसे तह़ाइफ़ पेश कीजिये, बीमार होने पर ता'ज़िय्यत कीजिये, ख़ुशी के मौक़अ़ पर मुबारक बाद दीजिये, ज़रूरत पड़े तो मदद कीजिये, लोगों के सामने उस की जाइज़ ता'रीफ़ कीजिये, जिस क़दर उसे फ़ाइदा पहुंच सकता हो पहुंचाइये । वग़ैरा वग़ैरा

www.dawateislami.net

(9).....''**दूसरों की ख़ुशी में ख़ुश रहने की आ़दत बनाइये ।**'' क्यूंकि येह रब عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत और निज़ामे कुदरत है कि उस ने तमाम लोगों के रहन सहन, उन को दी जाने वाली ने'मतों को यक्सां नहीं रखा तो यक़ीनन इस बात की कोई गॅरन्टी नहीं कि किसी की ने'मत छिन जाने से वोह आप को ज़रूर मिल जाएगी, लिहाज़ा **हसद** के बजाए अपने भाई की ने'मत पर ख़ुश रहें ।

(10).....''**मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये ।**'' कि आज के इस पुर फ़ितन दौर में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ पाबन्दे सुन्नत बनने, नेकियां करने और गुनाहों से बचने का जज़्बा मिलेगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी को आ'ला दीनी या दुन्यावी मन्सब व मर्तबे पर फ़ाइज़ देख कर दिल जलाना और येह तमन्ना करना कि इस से कोई ऐसी ग़लती सरज़द हो कि येह मक़ाम व मर्तबा इस से छिन जाए और येह ज़लीलो रुस्वा हो जाए, या दुन्यवी ने'मतों मसलन आ़लीशान बंगला शानदार गाड़ी, बेंक बेलेन्स, नोकर चाकर और दीगर सहूलिय्यात व आसाइशात को देख कर येह तमन्ना करना कि इस के हां चोरी या डकेती हो जाए या इस की दुकान व मकान में आग लग जाए और येह कोड़ी कोड़ी का मोह़ताज हो जाए, ऐसी तमन्ना करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । ज़रा सोचिये ! क्या कभी ऐसा भी हुवा कि किसी मुसलमान को नमाज़, रोज़े और दीगर फ़राइज़ व वाजिबात की पाबन्दी करता देख कर हमारे दिल में भी उस जैसा बनने की तमन्ना पैदा हुई हो ? किसी इस्लामी भाई को सुनन व मुस्तह़ब्बात मसलन तिलावते कुरआन, तहज्जुद, इशराक़ व चाश्त और अव्वाबीन के नवाफ़िल की पाबन्दी करता देख कर हमें उस की पैरवी करने का जज़्बा मिला हो ? किसी को दुरूदे पाक की कसरत करता देख कर हमारा भी दुरूद शरीफ़ पढ़ने को जी चाहा हो ? किसी को सदक़ा व ख़ैरात करते देख कर

www.dawateislami.net

हमारा भी राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का ज़ेहन बना हो ? किसी आ़शिक़े रसूल को दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बनते देख कर हम ने भी राहे ख़ुदा में सफ़र करने की निय्यत की हो ? याद रखिये ! दुन्या का मालो अस्बाब इस लाइक़ ही नहीं कि इस पर रश्क किया जाए, क्यूंकि येह तो यहीं दुन्या ही में रह जाएगा, आख़िरत की आ़लीशान ने'मतें उसी को मिलेंगी जिस ने दुन्या में नेकियों का ख़ज़ाना जम्अ़ किया होगा । इस लिये हमें चाहिये कि दुन्यावी ने'मतों पर ललचाने के बजाए नेक लोगों जैसी आ़दात पैदा करने की कोशिश करें और छोटी से छोटी नेकी को भी फ़ौरन कर लें ।

साबिरो शाकिर कौन ?

रह़मतुल्लिल आ़लमीन, इमामुस्साबिरीन, सय्यिदुश्शाकिरीन, सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़म्बरीन है : "दो ख़स्लतें ऐसी हैं कि जिस में येह होंगी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपने नज़्दीक शाकिरो साबिर लिख देगा । इन में से एक येह है कि वोह दीन के मुआ़मले में (या'नी इल्मो अ़मल) में अपने से बरतर की त़रफ़ नज़र करे, पस उस की पैरवी करे और दूसरी येह की दुन्या के मुआ़मले में अपने से कमतर की त़रफ़ देखे, पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे शाकिरो साबिर लिखेगा और जो अपने दीन में अपने से कमतर को देखे और अपनी दुन्या में अपने से बरतर को देखे तो फ़ौत शुदा दुन्या पर ग़म करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे न शाकिर लिखे न साबिर । (سُنَنُ التِّرْمِذِی ج۴ص۲۲۹حدیث۲۵۲۰دارالفکربیروت)

क़ाबिले रश्क कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़सद नहीं है मगर दो शख़्सों पर, एक वोह शख़्स जिसे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआन सिखाया, वोह रात और दिन के अवक़ात में उस की तिलावत करता है, उस के पड़ोसी ने सुना तो कहने लगा : काश ! मुझे भी वैसा ही दिया जाता जो फ़ुलां शख़्स को दिया

www.dawateislami.net

गया, तो मैं भी उस की तरह अमल करता। दूसरा वोह शख़्स कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने उसे माल दिया, वोह हक़ में माल को ख़र्च करता है, किसी ने कहा : काश ! मुझे भी वैसा ही दिया जाता जैसा फ़ुलां शख़्स को दिया गया, तो मैं भी उसी की तरह अमल करता। (صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، ج۳، ص۴۱۰، الحدیث: ۵۰۲۶)

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, शहनशाहे कौनो मकान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मेरे दोस्तों में ज़ियादा क़ाबिले रश्क मेरे नज़दीक वोह मुसलमान है जो कम सामान वाला, नमाज़ के बड़े हिस्से वाला हो, अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इबादत ख़ूब अच्छी तरह करे और ख़ुफ़्या उस की इताअत करे और लोगों में छुपा हुवा रहे कि उस की तरफ़ उंगलियों से इशारे न किये जाएं, उस का रिज़्क़ बक़दरे ज़रूरत हो, इस पर सब्र करे।" फिर फ़रमाया : "उस की मौत जल्द आ जाए, उस पर रोने वालियां कम हों और उस की मीरास थोड़ी हो।

(سنن الترمذی، کتاب الزہد، ج۴، ص۱۵۵، الحدیث: ۲۳۵۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि अगर किसी को दुन्यावी ने'मतों की लज़्ज़तों में महज़ूज़ (ख़ुश) देखें, तो हसद की आग में जलने कुढ़ने के बजाए, नेकियों में एक दूसरे पर सबक़त ले जाएं, नेक लोगों को देख कर इन जैसी नेक आदतों और अच्छी ख़स्लतों को अपनाने की कोशिश करें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें हसद और दीगर बातिनी अमराज़ से बचते हुवे इन का भी इलाज करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

नेकियों में दिल लगे हर दम, बना	**आमिले सुन्नत ऐ नानाए हुसैन**
मैं गुनाहों से सदा बचता रहूं	**कीजिये रहमत ऐ नानाए हुसैन**
झूट से बुग्ज़ो हसद से हम बचें	**कीजिये रहमत ऐ नानाए हुसैन**

(वसाइले बख़्शिश, स. **258**)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान में हम ने ह़सद की तबाहकारियों और इस के इ़लाज से मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल की । सब से पहले एक ह़ासिद की इ़ब्रतनाक अन्जाम से मुतअ़ल्लिक़ ह़िकायत सुनी, जिस से मा'लूम हुवा कि जो ह़सद की आग में जलते हुवे किसी दूसरे का बुरा सोचता है तो वोह दुन्या में ही लोगों के लिये निशाने इ़ब्रत बन जाता है । इस के बा'द हम ने ह़सद की ता'रीफ़ सुनी कि इस बात की तमन्ना करना कि मह़सूद (जिस पर ह़सद किया जाए उस) की ने'मत उस से ज़ाइल हो कर मुझे मिल जाए । या'नी किसी की दुन्यवी ने'मत, इ़ज़्ज़त व शोहरत को देख कर येह ख़्वाहिश करना कि उस से ख़त्म हो कर येह सब मुझे ह़ासिल हो जाए । इस के बा'द हम ने ह़सद की मज़म्मत पर क़ुरआने पाक की आयात और अह़ादीसे मुबारका सुनीं । एक ह़दीसे पाक में सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बुग़्ज़ व ह़सद ख़त्म करने और आपस में मह़ब्बत क़ाइम करने के लिये सलाम को आ़म करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया, हमें भी चाहिये कि जब भी किसी छोटे बड़े से मुलाक़ात हो, ख़्वाह हम उसे जानते हों या न जानते हों, सलाम में पहल करें, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से आपस की दुश्मनी ख़त्म हो जाएगी और ह़सद की बात़िनी बीमारी से बचना भी नसीब होगा । फिर हम ने सुना कि सब से पहले ह़सद के गुनाह का इर्तिकाब करने वाला शैत़ान था कि उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ह़सद किया और हुक्मे ख़ुदावन्दी बजा लाने से इन्कार किया । याद रहे ह़सद और ह़िर्स (लालच) शैत़ान के कामयाब तरीन वार हैं, जिन के ज़रीए़ येह इन्सान को झूट, ग़ीबत, चुग़ली, तोहमत, ईज़ाए मुस्लिम और न जाने कैसे कैसे गुनाह करवाता है । हमें शैत़ान के हर वार को नाकाम बनाने की कोशिश करनी होगी ।

शैत़ान के ख़िलाफ़ जंग..... जारी रहेगी । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता हम भी इस मोहलिक मरज़ में मुब्तला हैं तो हमें इस के इलाज में देर नहीं करनी चाहिये । इस के इलाज के लिये सब से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कीजिये और दुआ कीजिये कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे इस बातिनी मरज़ से बचने में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा । आमीन । इस के इलावा हसद की तबाहकारियों पर भी नज़र रखिये कि हसद की बीमारी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी का सबब है, इस से नेकियां ज़ाएअ़ हो जाती हैं और दीगर बहुत से गुनाहों के इर्तिकाब के साथ साथ हमारा चैनो सुकून भी बरबाद हो जाता है । लिहाज़ा हमें किसी को ने'मतों में ख़ुश देख कर जलने और दिल में दुश्मनी बिठा लेने के बजाए बिल ख़ुसूस नेक लोगों को देख कर उन जैसा बनने की ख़्वाहिश और तमन्ना करनी चाहिये । क्यूंकि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नेकियों में एक दूसरे पर सबक़त ले जाने की तरग़ीब दिलाई है । चुनान्चे, फ़रमाया : हसद नहीं है मगर दो शख़्सों पर, एक वोह शख़्स जिसे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआन सिखाया, वोह रात और दिन के अवक़ात में उस की तिलावत करता है, उस के पड़ोसी ने सुना तो कहने लगा : काश ! मुझे भी वैसा ही दिया जाता जो फ़ुलां शख़्स को दिया गया, तो मैं भी उस की त़रह़ अ़मल करता । दूसरा वोह शख़्स कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने उसे माल दिया, वोह ह़क़ में माल को ख़र्च करता है, किसी ने कहा : काश ! मुझे भी वैसा ही दिया जाता, जैसा फ़ुलां शख़्स को दिया गया तो मैं भी उसी की त़रह़ अ़मल करता । (صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، ج۳، ص۴۱۰، الحدیث: ۵۰۲۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम भी हसद और दीगर बातिनी गुनाहों से बचने का इरादा और ज़ियादा से ज़ियादा नेकियां करने का जज़्बा पाना चाहते हैं तो दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाएं और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा

www.dawateislami.net

मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने वाले बन जाएं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से हमें दुन्या व आख़िरत की बेशुमार भलाइयां नसीब होंगी ।

मजलिसे मदनी इन्आ़मात का तआ़रुफ़ :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़्वाहिशात के ऐ़न मुत़ाबिक़ इस्लामी भाइयों, इस्लामी बहनों और जामिआ़तुल मदीना व मदारिसुल मदीना के त़लबा व त़ालिबात को बा अ़मल बनाने के लिये, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की तरग़ीब दिलाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त मजलिसे मदनी इन्आ़मात का क़ियाम अ़मल में आया ।

आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : काश ! दीगर फ़राइज़ व सुनन की बजा आवरी के साथ साथ तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इन मदनी इन्आ़मात को भी अपनी ज़िन्दगी का दस्तूरुल अ़मल बना लें, और तमाम ज़िम्मेदाराने दा'वते इस्लामी भी अपने अपने ह़ल्क़े में इन (मदनी इन्आ़मात के रसाइल) को आ़म कर दें और हर मुसलमान अपनी क़ब्रो आख़िरत की बेहतरी के लिये इन मदनी इन्आ़मात को इख़्लास के साथ अपना कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से जन्नतुल फ़िरदौस में मदनी ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोसी बनने का अ़ज़ीम तरीन इन्आ़म पा ले ।''

आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़्वाहिश के पेशे नज़र मजलिसे मदनी इन्आ़मात के तमाम ज़िम्मेदारान को ताकीद की जाती है कि ज़ैली ह़ल्क़ा, ह़ल्क़ा, अ़लाक़ा, डिवीज़न और काबीना सत़्ह़ के तमाम ज़िम्मेदारान व दीगर इस्लामी भाइयों के हमराह ज़ैली ह़ल्क़ों का जदवल बनाएं । इस्लामी भाइयों के पास जा जा कर इनफ़िरादी कोशिश कर के मदनी इन्आ़मात का रिसाला पेश करते हुवे, इस पर अ़मल करने का ज़ेह्न बनाएं, फ़िक्रे मदीना करने का त़रीक़ा समझाएं, तय्यार हो जाने वालों के नाम लिखें, ज़ैली ज़िम्मेदार के पास ज़ैली, ह़ल्क़ा ज़िम्मेदार के पास ह़ल्क़ा और अ़लाक़ा/ शहर ज़िम्मेदार के पास अ़लाक़ा /

www.dawateislami.net

शहर के (ज़िम्मेदारान व अहले महब्बत) इस्लामी भाइयों की फ़ेहरिस्त मौजूद हो, येह तमाम ज़िम्मेदारान, उन इस्लामी भाइयों से राबिता रखें फिर उन्हें फ़िक्रे मदीना करने की याद दिहानी भी करवाते रहें।

12 मदनी कामों में हिस्सा लीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकियां करने, गुनाहों से बचने और नेकी की दा'वत को आम करने के लिये ज़ैली हल्क़े के **12** मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लीजिये। जैली हल्क़े के **12** मदनी कामों में से एक मदनी काम, मदनी इन्आमात भी है। हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام भी न सिर्फ़ खुद फ़िक्रे आख़िरत में अपने आ'माल का मुहासबा करते, बल्कि लोगों को भी इस का ज़ेहन दिया करते, जैसा कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ऐ लोगो ! अपने आ'माल का हिसाब कर लो, इस से पहले कि क़ियामत आ जाए और तुम से इन का हिसाब लिया जाए।

(حلیۃ الاولیاء، ج۱، ص۵۶)

शैखे़ तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने इस पुर फ़ितन दौर में फ़िक्रे आख़िरत का ज़ेहन बनाने, आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के तरीक़ों पर मुश्तमिल मदनी इन्आमात ब सूरते सुवालात अता फ़रमाए हैं। इस्लामी भाइयों के लिये **72**, इस्लामी बहनों के लिये **63**, स्कूल्ज़, कॉलेजिज़ और जामिआत के तलबा के लिये **92** नीज़ तालिबात के लिये **83**, और मद्रसतुल मदीना के मदनी मुन्नों के लिये **40** मदनी इन्आमात हैं, इसी तरह ख़ुसूसी या'नी गूंगे बहरे और नाबीना इस्लामी भाइयों और क़ैदियों के लिये भी मदनी इन्आमात मुरत्तब फ़रमाए हैं। मदनी इन्आमात के रसाइल मक्तबतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन तलब किये जा सकते हैं, इन का बग़ौर मुतालआ करने के बा'द आप इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि येह दर अस्ल खुद एहतिसाबी का एक जामेअ निज़ाम है, जिस को अपना लेने के बा'द नेक बनने की राह में हाइल रुकावटें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से आहिस्ता आहिस्ता दूर हो जाती हैं।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मदनी इन्आ़मात पर अ़मल के ज़रीए नेकियों की आ़दत अपनाने, बुग़्ज़ो ह़सद और दीगर बात़िनी बीमारियों की आफ़त से पीछा छुड़ाने, आपस में उख़ुव्वत व मह़ब्बत बढ़ाने, रिज़ाए इलाही पाने, दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा जगाने, ईमान की ह़िफ़ाज़त की कुढ़न बढ़ाने, ख़ुद को अ़ज़ाबे क़ब्रो जहन्नम से डराने, सुन्नतों का पाबन्द बनाने, दिल में इ़श्क़े रसूल की शम्अ़ जलाने और जन्नतुल फ़िरदौस में मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाने का शौक़ बढ़ाने के लिये दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल अपना लीजिये । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस मदनी माह़ोल की बरकत से गुनाहों में मुलव्वस रहने वाले बे शुमार अफ़राद तौबा कर के नेकियों की राह पर गामज़न हो गए । आइये ! तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार सुनते हैं ।

ह़ैरत है कि मैं ने डब्बू स्नोकर कैसे छोड़ दिया !

लियाक़त आबाद (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : मैं बे तह़ाशा फ़िल्मे डिरामे देखा करता, डब्बू स्नोकर खेलने का जुनून की ह़द तक शौक़ था, ह़त्ता कि किसी के डांटने बल्कि मारने तक से भी येह लत नहीं छूट सकती थी । गुनाहों की नुहूसत का आ़लम येह था कि مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ पढ़ने से दिल घबराता था । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से हमारे अ़लाक़े की फ़ुरक़ानिय्या मस्जिद (लियाक़त आबाद, बाबुल मदीना कराची) में तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से होने वाले आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक (**1425** हि. / सि. **2004** ई.) के इजतिमाई ए'तिकाफ़ के अन्दर मैं गुनहगार भी आ़शिक़ाने रसूल के साथ मो'तकिफ़ हो गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी इन्आ़मात की बरकत से आख़िरत बनाने की सोच बनी और गुनाहों से कुछ बे रग़बती पैदा हुई । फिर क़ादिरिय्या रज़विय्या सिलसिले में मुरीद बना तो नमाज़ की पाबन्दी नसीब हुई, मैं ने डब्बू स्नोकर खेलना तर्क कर दिया । मुझे ह़ैरत है कि मैं ने येह कैसे छोड़ दिया ! इस के बा'द दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा

www.dawateislami.net

सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ के आख़िरी दिन सह़राए मदीना (बाबुल मदीना कराची) में ह़ाज़िरी हुई, वहां "**T.V** की तबाहकारियां" के मौज़ूअ़ पर बयान हुवा। इस को सुन कर मैं अ़ज़ाबे क़ब्रो ह़श्र के ख़ौफ़ से लरज़ उठा और मैं ने अ़ह्द कर लिया कि कभी भी **T.V** नहीं देखूंगा। मैं ने अपनी प्यारी अम्मी जान को "**T.V** की तबाहकारियां" नामी केसीट सुनाई तो उन्हों ने भी **T.V** देखना बिल्कुल बन्द कर दिया और सरकारे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की मुरीदनी बनने का जज़्बा पैदा हुवा, चुनान्चे, इन को भी बैअ़त करवा दिया। इस की बरकत से अम्मी जान फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ साथ तहज्जुद, इशराक़ और चाश्त भी पाबन्दी से पढ़ने लगीं। ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मतो शान पर मेरी जान क़ुरबान ! थोड़े ही अ़र्से में अम्मी जान को मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا का बुलावा आ गया। इस पर अम्मी ने ख़ुद फ़रमाया कि येह सब बैअ़त होने का फ़ैज़ है। येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं अपने यहां ज़ैली क़ाफ़िला ज़िम्मेदार की ह़ैसिय्यत से मेरी प्यारी प्यारी मदनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की ख़िदमत करने की कोशिश कर रहा हूं।

(फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल, बाब फ़ैज़ाने रमज़ान, स. **1505**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे ह़िदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح، ج۱ ص۵۵ حدیث ۱۷۵ دار الکتب العلمیۃ بیروت)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **''163 मदनी फूल''** से इ़मामा शरीफ़ के मदनी फूल सुनते हैं ।

दो फ़ज़ीलतें मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (1) इ़मामे के साथ दो रक्अ़त नमाज़ बिग़ैर इ़मामे के **70** रक्अ़तों से अफ़्ज़ल हैं । (اَلْفِرْدَوْس بِمَأْثُورِ الْخَطَّاب ج2ص265 حدیث3233) (2) बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं जुम्ए़ के रोज़ इ़मामे वालों पर (اَلْفِرْدَوْس بِمَأْثُورِ الْخَطَّاب ج1ص147 حدیث529) ۞ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **1197** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''बहारे शरीअ़त'' जिल्द **3** सफ़ह़ा **660** पर है : इ़मामा खड़े हो कर बान्धे और पाजामा बैठ कर पहने, जिस ने इस का उल्टा किया (या'नी इ़मामा बैठ कर बान्धा और पाजामा खड़े हो कर पहना) वोह ऐसे मरज़ में मुब्तला होगा जिस की दवा नहीं । ۞ बान्धने से पहले रुक जाइये और अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये वरना एक भी अच्छी निय्यत न हुई तो सवाब नहीं मिलेगा लिहाज़ा कम अज़ कम येही निय्यत कर लीजिये कि रिज़ाए इलाही के लिये बत़ौरे सुन्नत इ़मामा बान्ध रहा हूं । ۞ मुनासिब येह है कि इ़मामे का पहला पेच सर की सीधी जानिब जाए । (फ़तावा रज़विय्या जि. **22** स. **199**) ۞ ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक इ़मामे का शिम्ला उ़मूमन पुश्त (या'नी पीठ मुबारक) के पीछे होता था और कभी कभी सीधी जानिब, कभी दोनों कन्धों के दरमियान दो शिम्ले होते, उलटी जानिब शिम्ला लटकाना ख़िलाफ़े सुन्नत है । (اشعة اللّمعات ج3ص582) ۞ इ़मामे के शिम्ले की मिक़्दार कम अज़ कम चार उंगल और ज़ियादा से ज़ियादा (आधी पीठ तक या'नी तक़रीबन) एक हाथ । (फ़तावा रज़विय्या जि. **22** स. **182**) ۞ (बीच की उंगली के सिरे से ले कर कोहनी तक का नाप एक हाथ कहलाता है) ۞ इ़मामा क़िब्ला रू खड़े खड़े बान्धिये । (كَشْفُ الالْتِبَاس فِي اسْتِحْبَابِ اللِّبَاس ص38) ۞ इ़मामे में सुन्नत येह है कि ढाई गज़ से कम न हो, न छे गज़ से ज़ियादा और इस की बन्दिश गुम्बद नुमा हो । (फ़तावा रज़विय्या जि. **22** स. **186**) ۞ इ़मामे को जब अज़ सरे नौ बान्धना हो तो जिस त़रह़ लपेटा है उसी त़रह़ खोले और यक बारगी ज़मीन पर न फेंक दे । (عالمگیری ج5ص330) ۞ अगर ज़रूरतन उतारा और

www.dawateislami.net

दोबारा बान्धने की निय्यत हुई तो एक एक पेच खोलने पर एक एक गुनाह मिटाया जाएगा । (मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा रज़विय्या. जि. **6** स. **214**) ۞ मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحمَۃُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

دستارِ مبارک آنحضرت صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ در اکثر سفید بود وگاہے سیاہ احیاناً سبز

या'नी नबिय्ये अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इमामा शरीफ़ अकसर सफ़ेद, कभी सियाह और कभी सब्ज़ होता था ।

(کشف الالتباس فی استحباب اللباس للشیخ عبد الحق الدھلوی ص38)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सब्ज़ रंग का इमामा शरीफ़ भी सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के मकीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सरे अन्वर पर सजाया है, दा'वते इस्लामी ने सब्ज़ सब्ज़ इमामे को अपना शिआ़र बनाया है और सब्ज़ सब्ज़ इमामे की भी क्या बात है ! मेरे मक्की मदनी आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर बना हुवा जगमग जगमग करता गुम्बद शरीफ़ भी सब्ज़ सब्ज़ है ! आ़शिक़ाने रसूल को चाहिये कि सब्ज़ सब्ज़ रंग के इमामे से हर वक़्त अपने सर को ''**सर सब्ज़**'' रखें और सब्ज़ रंग भी ''**गहरा**'' होने के बजाए ऐसा प्यारा प्यारा और निखरा निखरा सब्ज़ हो कि दूर दूर से बल्कि रात के अन्धेरे में भी सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के सब्ज़ सब्ज़ जलवों के तुफ़ैल जगमगाता नूर बरसाता नज़र आए ।

नहीं है चांद सूरज की मदीने को कोई ह़ाजत
वहां दिन रात उन का सब्ज़ गुम्बद जगमगाता है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब, ''**बहारे शरीअ़त**'' **ह़िस्सा 16** (**312** सफ़ह़ात) नीज़ **120** सफ़ह़ात की किताब ''**सुन्नतें और आदाब**'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

तीन दिन हर माह जो अपनाए मदनी क़ाफ़िला बे ह़िसाब उस का ख़ुदाया ! ख़ुल्द में हो दाख़िला

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक

(1) शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ۱۰۱ ملخصًا)

(2) तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे। (اَیضاً ص ٦٥)

(3) रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रह़मत के **70** दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۲۷۷)

www.dawateislami.net

(4) एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं। (مجمع الزوائد)

(5) छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

हज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

(6) कुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया। इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि येह कौन ज़ी मर्तबा है ! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

-: मिन जानिब :-

MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)

Translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)

www.dawateislami.net